P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
Remarking
Vol-II * Issue- X* March- 2016

आधुनिक संस्कृत पद्य काव्य और चित्रकला में पर्यावरणीय चेतना

दिनेश कुमार वर्मा
व्याख्याता
चित्रकला विभाग,
राजकीय महाविद्यालय, सांगोद,
कोटा, राजस्थान

सारांश

पर्यावरण चेतना सर्वसमावेशिता तथा विश्वात्मकचैतन्य की अनुभूति के कारण विशिष्ट व अद्वितीय है। आधुनिक संस्कृत पद्य काव्य और चित्रकला में पर्यावरणीय चेतना प्रतिफलित हुई है। आधुनिक संस्कृत पद्य काव्य और चित्रकला में रचनाकारों ने मानवीय जीवन और उसके पर्यावरणीय प्रभाव की सहभागिता का बोध कराया है। पर्यावरण को हम एक परम सत्ता के द्वारा रची गई दृश्य और अदृश्य क्षैतिज तथा तिर्यक सृष्टि के परिमांडल्य रूप में समझ सकते हैं। इस बोध में ईश्वर द्वारा रचित समग्र सृष्टि तथा परिमांडल्य रूप को रचनाकारों की रचना में परिभाषित होते देखते हैं। पर्यावरण परमपिता परमेश्वर के समान एक सर्वव्यापी, मूर्त–अमूर्त व अनुभवगम्य तत्व है जिसके इर्द–गिर्द मानव जीवन का स्थायित्व है। रचनाकारों ने अपने जीवन से जुड़े विविध पहलुओं जैसे आधिभौतिक, आधिदैविक व आध्यात्मिक त्रिविध विचारधारा को कला सृजन का आधार बनाया और पर्यावरणीय चेतना के प्रति अपने–अपने विचारों को जगजाहिर किया।

21वीं सदी में नवीन सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक बोध के साथ जो नई राष्ट्रचेतना संस्कृत पद्य काव्य और चित्रकला में जागृत हुई उसने रचनाकारों के पर्यावरणीय निरूपण में नये आयाम जोड़े हैं। मानव जीवन के सौन्दर्यमय और सुखमय वातावरण का चित्रण कर रचनाकारों ने पर्यावरणीय चेतना के प्रति मानव जाति को सजग बनाया है।

मुख्य शब्द : कला, कलाकार, सृजन, मौलिकता, भावों की अभिव्यक्ति, सौन्दर्य, पर्यावरणीय चेतना, दृश्य व अदृश्य वातावरण, सृष्टि, संस्कृत पद्य काव्य आदि।

प्रस्तावना

प्राचीनकाल से कलाकार कला का पोषक रहा। कला में रचनाकार समयानुकूल अपने विचारों को रचता रहा। प्रकृति प्रदत्त रूपों का प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूपान्तरण कला में निहित दिखाई देता है। कला शब्द की उत्पत्ति मूलतः संस्कृत के 'कल' धातु से मानी जाती है जिसका अर्थ है – बनाना, पैदा करना अथवा फिट करना आदि। काव्य कला के रूप में संस्कृत साहित्य तथा दृश्य कला के रूप में चित्रकला को जाना जाता है। रचनाकारों ने संस्कृत में शब्दों को सुलेखित कर पर्यावरणीय चेतना को लिपिबद्ध किया वहीं चित्रकला में कला तत्त्वों तथा संयोजन के सिद्धान्तों के आधार पर पर्यावरणीय प्रभाव को अभिव्यक्त किया।

उद्देश्य

पर्यावरण को जैविक घटकों तथा इसके भौतिक परिवे"ा अथवा आवास के मध्य परस्पर अन्तःक्रिया के रूप में जाना जाता है। मानव जीवन के सम्बन्ध में पर्यावरण से अभिप्रायः पृथ्वी पर मानव के चारों ओर फैले उन सभी भौतिक और जैविक स्वरूपों से है। जिनसे वह निरन्तर प्रभावित होता रहता है। इस रूप में मानव पर्यावरण का सम्बन्ध प्रकृति, सांस्कृतिक, सामाजिक, वैज्ञानिक व भौतिकवादी तथा कलामय विचारों से है।

कला की अभिव्यक्ति का प्रका"ान मानव जीवन का रचनात्मक गुण रहा। मानव जीवन में प्रारम्भिक कला से ही जीवन के मूर्त–अमूर्त रूपाकरों और विचारधाराओं को रचनात्मकता के साथ अभिव्यक्त करने की प्रवृत्ति रही है। इस रूप में देखे तो पर्यावरणीय चेतना मुख्यतः समयकाल व अभिव्यक्ति में होते रहे बदलाव और तत्प्रचलित विचारधाराओं एवं भौतिकवादिता पर केन्द्रित रहा। आधुनिक मानव वैज्ञानिक टेक्नोलोजी और भौतिकवादी सुख की मीमांषावृत्ति से अभिभूत है, वहीं दूसरी ओर प्रकृति के आन्तरिक व बाह्य स्वरूप के असंतुलन से भयंकर त्रासदो की ओर अग्रसर है। पर्यावरण प्रदूषण मानव जीवन के लिए ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण जीवन–जगत के लिए एक गम्भीर विचारोत्तेजक समस्या है।

मेरे शोध पत्र का उद्देश्य ऐसे रचनाकारों के व्यक्तित्व व कृतित्व की भूमिका को रेखांकित करने का है, जो पर्यावरणीय चेतना से जुडकर आधुनिकता की ओर अग्रसर होते रहें मेरे शोध का यह भी एक ठोस तथ्य है कि रचनाकारों ने आधुनिक संस्कृत पद्य काव्य और चित्रकला के माध्यम से कला के विकास क्रम में नवसृजन कर कला जगत में अपनी नई पहचान बनाई। इनकी रचनाऐं समाज को नई दि"ाा प्रदान करती है। निःसंदेह, इनकी कला की रचनाओं को समाज के सामने लाना महत्त्व रखता है।

रचनाकारों ने विविध विषयों की रचना कर नवीन कला भाषा को इजाद किया है। जिनमें उनके मनोभावों की अभिव्यक्ति निहित है। अधिकां"ा दृ"यावलियों में प्रकृति के आकारिद् रूप और उसकी लिपिबद्ध उपयोगिता को प्रकट करने का प्रयत्न किया गया है। प्रकृति के विविध रूपाकार समस्त प्राणी जगत के जीवन को महत्त्व प्रदान करते है। इनकी कला सामाजिक जागरूकता को द"ार्ाती है। निःसंदेह, रचनाकारों ने पर्यावरणीय चेतना के तहत चिंतन"ाील विचारों को रचकर मानवीय जीवन को सजग बनाने का प्रयत्न किया है। मेरा मंतव्य इसी महत्वपूर्ण तथ्य को सत्यापित करने का है।

पर्यावरण भौतिक एवं जैविक संकलन है जिसमें पृथ्वी के अजैविक तथा जैविक संघटकों को समाविष्ट किया जाता है। मानव के सम्बन्ध में पर्यावरण से अभिप्राय भूतल पर मनष्य के इर्द–गिर्द उन सभी भौतिक और जैविक स्वरूपों से है जिनसे वह निरन्तर प्रभावित होता रहता है। सुखमय वातावरण मानव जीवन के लिए ही नहीं बल्कि सभी प्राणी मात्र के लिए आवश्यक है। पर्यावरण के काल–चक्र को बनाये रखना हमारा परम कर्त्तव्य है। पर्यावरण को दूषित होने से बचाना हमारा धर्म है। रचनाकारों ने पर्यावरण के प्रति अपने चिंतनशील विचारों को अभिव्यक्त किया है। आधुनिक संस्कृत कवि हरिदत्त शर्मा के रचना संग्रह 'लसल्लतिका' में कवि ने महानगरों की यांत्रिक–बहुलता से बढ़ते प्रदूषण पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा है कि लोहचक्र तन–मन का शोषक है, जिससे वायुमण्डल और भूमण्डल दोनों मलिन हो रहे हैं। कवि महानगरीय जीवन से दूर वन प्रदेशों की ओर चलने की अभिलाषा व्यक्त करता है :–

दुर्वहमत्र जीवितं जातं प्रकृतिरेव शरणम्।
शुचि – पर्यावरणम्
महानगरमध्ये चलदनिशं कालायसचक्रम्।
मनः शोषयत् तनुः पेषयद् भ्रमति सदा वक्रम्।।
दुर्दान्तैर्दशनैरमुना स्यान्नैव जनग्रसनम्। शुचि.....।।1।।[1]

पर्यावरणीय चेतना ने मानव मन के भावुक पक्ष को प्रारम्भिक जीवन से ही उद्वेलित किया। प्रकृति के दृश्य व अदृश्य रूपाकार कलाकार मन के गूढ़ भावों को प्रदर्शित करने म प्रेरणाश्रोत रहे। निःसंदेह प्राकृतिक वातावरण के प्रति चेतना और कला सृजन की उत्प्रेरणा ने कलाकार को नवसृजन के प्रति सजग बनाया तथा वह कला में विभिन्न रूपों को रूपायित करता रहा। कहीं हरे–भरे वृक्षों से आच्छादित वन–उपवन, उमड़ते–घुमड़ते बादलों की छटा तो कहीं बदलते मौसम की पुरवाईयाँ आदि विभिन्न प्रकृति के रूपों का रूपान्तरण कला में निहित दिखाई देता है।

संस्कृत साहित्य में लिखा है कि हरितिमा वातावरण मानव को रूचिकर लगता है।

हरिततरुणां ललितलतानां माला रमणीया।
कुसमावलिः समीरचालिता स्यान्मे वरणीया।।
नवमालिका रसालं मिलिता रूचिरं संगमनम्।। शुचि।।5।।[2]

प्रकृति चिंतन के प्रति रचनाकारों की संवेदनशील भावुकता अर्थपूर्ण शब्दों व भावपूर्ण शब्दावलियों तक ही सीमित नहीं है। बल्कि, इन्होंने रंग व रेखाओं के साथ रचना कर अपने संवेदनशील विचारों को अभिव्यक्ति माध्यम के लिए बन्दी बनाया है।

इस प्रकार पल–पल बदलते मौसम का मिजाज तथा बदलते स्वरूपों का सूक्ष्म अध्ययन चित्रकला में भी स्पष्ट परिलक्षित होता दिखाई देता है। निःसंदेह चित्रकारों ने प्रकृति के विविध पक्षों को विषयगत आधार बनाकर अपने तलस्पर्शी सामंजस्य के साथ आकर्षक रंग योजनाओं तथा लयात्मक रेखाओं की विविधता के माध्यम से रूपायित किया।

जीवन के लिए वायु व जल प्रदूषण एक ज्वलन्त समस्या है। सुखमय जीवन के लिए प्रदूषण को रोकना अतिआवश्यक है। मानव के लिए शीतल व मंद वायु सुख एवं संतुष्टि प्रदाता है।

सुखप्रदः शीतल–मन्द–वायुः
तृप्तिप्रदो गन्धवहो जनानाम्।
कष्टप्रदश्चक्रिल–वातरुप–
स्तथापि काम्यः पवनः सजीवैः ।।3।।[3]

पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु इन पंच तत्वों से हमारे भौतिक शरीर की रचना होती है। सूर्य और चन्द्रमा दो कालों का विधान करते हैं– दिन और रात। पर्यावरण के इस रूप में यह श्लोक उद्धृत है।

क्षिति–जल–पावक–गगन–समीरम्
रचयति मम भौतिकं शरीरम्।
तपन–हिमांशु काल–नियमने–
मम दीप्ते ज्योतिर्मय–नयने।
मूर्तस्त्वं में प्रियतम–भागः
तवाधरे किं ध्वंस–विहागः ?
कुरुषे मूढ़ ! न कथं किमर्शम्
मम विध्वंसे तवाऽपि मरणम्।।
निगदति मनुजं पर्यावरणम्।।[4]

पर्यावरण में पंच तत्वों का योग होता है। पार्क (Chris Park) के अनुसार ''पर्यावरण उन दशाओं का योग कहलाता है जो मानव को निश्चित समयावधि में नियत स्थान पर आवृत्त करती है।''[5] विश्व शब्दकोश (The Universal Encyclopedia) में पर्यावरण की परिभाषा निम्न रूप स दी है –

''पर्यावरण उन सभी दशाओं, प्रणालियों तथा प्रभावों का योग है जो जीवों व उनकी प्रजातियों के विकास, जीवन एवं मृत्यु को प्रभावित करता है।''[6] पर्यावरणीय प्रभाव से प्रेरित होकर कलाकारों ने अनेक कलाकृतियों का सृजन किया। इनके कल्पना संसार में प्रकृति के नैसर्गिक बिम्बों के साथ–साथ अन्तर्मन से शोधित रूपाकारों की अभिव्यक्ति है। प्राकृतिक व जैविक रूपाकार इनकी रचनाओं में आधुनिकता के साथ रचे गये हैं। आधुनिक दृश्य–चित्रण का जनक (The father of modern Landscape Painting) क्लॉद गैली लोरॉ को

माना जाता है जो फ्रांस में हुआ था।[7] ब्रिटिश दृश्य चित्रकार जोसफ विलियम टर्नर ने जल व तेल रंगों में प्रकति की सुन्दरता तथा विभत्स व रौद्र रूपों को रूपायित कर पर्यावरणीय चेतना की ओर ध्यानाकर्षण किया। अपनी कलाकृतियों में प्रकृति की विकरालता, भयानकता व रौद्र एवं विशाल रूपों को अंकित करने के पीछे टर्नर की कला का मुख्य ध्येय प्रकृति की विशालता एवं भयंकरता का चित्रण करके दर्शकों को आल्हादीत व आश्चर्य विभोर करना था। प्रायः टर्नर ने समुद्री जीवन का अध्ययन व निरीक्षण किया तथापि नदियाँ, पर्वत, समुद्री तूफान, कोहरे में उगता हुआ सूर्य, चाँदनी रात, चमकती हुई धूप तथा गम्भीर और विशाल मेघों से आच्छादित आकाश उन्हें अधिक प्रिय थे। इसी प्रकार कॉन्स्टेबल के दृश्य चित्रों में विषय के लिए प्रकृतिजन्य नैसर्गिकता यथाः– खेत–खलिहान, फटा–फटा आकाश, चाँदनी रात, नदी का किनारा, धूल के दृश्य, ओस से भीगी घांस के विशाल चरागाह, भूसा गाड़ी चित्रों का अंकन किया। इनकी कला में प्रकृतिजन्य नैसर्गिकता का प्रतिबिम्ब है। उष्ण रंग योजना, मोटे–मोटे ब्रशों से बड़े–बड़े व उन्मुक्त तुलिका घात से चित्रों को रूपायित किया गया है।

पंचतत्वों में सर्वोपरी जल है तथा यह विधाता की प्रथम रचना है। इतना ही नहीं, जीवन के रूप में जल पंच महाभूतों में मुख्य तत्व है। इस रूप में यह श्लोक उद्धृत है –

आद्या सृष्टिर्विधातुर्या
व्याप्य त्रिभुवनं स्थितम्।
प्रधानं पन्चतत्त्वेषु
जीवनं हि जलं स्मृतम्।।1।।[8]

जल को दूषित होने से बचाना जीवन के लिए हितकर है। जल ही जीवन है। निःसंदेह कलाकारों ने पंचतत्त्वों से होने वाले प्रभाव को कला में रचकर दर्शकों की चेतना को जागृत किया है।

चीनी कलाकारों ने भूदृश्य चित्रण की परम्परागत चित्रण तकनीक का सूक्ष्मता से अध्ययन कर आधुनिकता के साथ कला का सृजन किया। इनके प्रमुख विषय पर्वत श्रृंखलाएँ, नदी, झरने, पेड़ आदि रहे और बांस के पेड़ का चित्रण प्रिय विषय रहा। फलस्वरूप भूदृश्य चित्रण का परम्परागत चित्रण सशक्त रूप में किया। इस वर्ग में निम्न कलाकार आते हैं – हुंग–बिनहांग, शी– लू, फू–बओशी, पान–तिआन–सओ, ल्यू हाईसू, ली–केरन, गुआन शनयू आदि।[9] उतागावा हिरोशीजी जापान में दृश्य चित्रण करने वाला महान कलाकार था। कत्सुशिका होकूसाई ने 'माउण्ट फूजी के 36 दृश्यों का चित्रण किया। इन्होंने पर्वत, नदियाँ, वृक्ष, चिड़ियाँ, मछलियाँ, पुष्प, चट्टानें, लहरें, बतख, जलयान, भवन, ड्रेगन, कीड़े–मकोडे आदि का विविध अंकन किया।[10] चीनी–जापानी कलाकारों ने जल रंगों की पारदर्शिता के साथ प्रकृति का अंकन किया। इसी प्रकार यूरोपीय चित्रकार क्लोद् मोने ने तेल रंगों में प्रकृति के विविध रूपों को इन्द्रधनुषीय रंगों तथा फ्लोशेताज़ तकनीक से सृजित किया। इनकी कला में प्रकाश के क्षणिक सौन्दर्य का दर्शन है। 'सूर्य उदय' चित्र इनका प्रिय विषय है वहीं प्रकृति के विविध विषयगत रूप आनन्ददायी है।

भारतीय चित्रकारों ने जल, तेल, टेम्परा व एक्रेलिक माध्यम में अनेक प्राकृतिक दृश्यों को रूपायित किया। इनके दृश्य चित्रों में समयानुकूल पर्यावरणीय प्रभाव दर्शनीय है। कलाकार बी.सी. सान्याल के भू दृश्य, नित्यानंद महापात्र के दृश्य चित्र जल रंगों में रंगायित हैं। इसी प्रकार एन.एस.बेन्द्रे की बोट एण्ड शिप एचिंग माध्यम में रूपायित है। मनोहर कौल के प्राकृतिक चित्रों में प्रकृति का रूपान्तरण जैसे आकाश, पेड़–पौधे, धरातल, पहाड़, पानी, हवा का वेगवान प्रभाव को जल रंगों में निरूपित किया गया है। भारतीय तीर्थस्थलों के प्राकृतिक दृश्यों में रणवीर सक्सेना ने प्रकृति की अनुपम छटा को अपने संवेदनशील विचारों से अनुप्लावित कर केनवास पर तेल माध्यम में और कागज पर जल रंगों में उतारा है। इसी प्रकार जल रंगों में बीरेश्वर सेन का माउण्टेन, आर.एस. धीर का पंचमढ़ी, सेफाली भट्नागर का कुकरैल फारेस्ट तथा शबनम मेहरा के भू–दृश्य में पर्यावरणीय प्रभाव परिलक्षित होता है। सतीश चन्द्रा का प्राकृतिक दृश्य दिलीप दास गुप्ता का नचर, मदन लाल नागर का फारमर इन फील्ड, बी.एल.शाह का हिमालय, अजीत सिंह का प्रकृति चित्र, खलिक अश्फाक का प्राकृतिक दृश्य, तेल रंगों में एवं योगेन्द्रनाथ योगी का माउण्टेन, राजीव मिश्र का लैण्डस्केप एक्रेलिक माध्यम में निर्मित है। इन्होंने ईश्वरीय सृष्टि–प्रकृति के अनुपम सौन्दर्य को चित्र रूप दिया है। इतना ही नहीं, काव्य सदृश्य रस के आस्वादन, कल्पना द्वारा अभिव्यक्ति होने पर भी यथार्थ सदृश्य रूप, रमणीय वर्ण व कलात्मक अभिव्यंजना का संसार इनकी कला में निहित है।

राजस्थान के भौगोलिक वातावरण और परिस्थितियों ने यहाँ की कला व संस्कृति को प्रभावित किया। राजस्थानी संस्कृति में चित्रकला की अपनी विलक्षण पहचान है। कलाकारों ने भिन्न–भिन्न रीति–रिवाज़ों जीवन शैली, वेशभूषा, प्राकृतिक सौन्दर्य तथा साहित्य को चित्रण का आधार बनाया। संस्कृत साहित्य में पर्यावरण का विभिन्न रूपों में वर्णन किया। निःसंदेह राजस्थान के कलाकारों पर पर्यावरण का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक रहा। स्वाधीनता के पश्चात् असित कुमार हलदार, शैलेन्द्रनाथ डे इत्यादि कलाकारों ने महाराजा स्कूल ऑफ आर्ट में दीक्षित कलाकारों में कला की उत्प्रेरणा जागृत की और उन्हें नवीन सृजन के लिए प्रेरित किया। रामगोपाल विजयवर्गीय ने कला में पारम्परिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, पुराणों, प्राचीन साहित्यिक कृतियों के चरित्र प्रधान पात्रों एवं आदर्श कथानकों के साथ सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन के विविध विषयों को अपने तलस्पर्शी सामंजस्य से नियोजित किया। चित्रों में आकर्षक रंग योजना तथा लयात्मक रेखाओं की विविधता है। पद्मश्री कृपाल सिंह शेखावत की कला में अजंता, बंगाल, मालवा, जैन, मेवाड़, पहाड़ी तथा विदेशी कला चीनी, जापानी, इरानी, इण्डोनेशिया की पारम्परिक व शास्त्रीय कलाओं का प्रभाव स्पष्ट झलकता है। ब्लू पॉटरी के पात्रों पर राजस्थानी लोक कला की कहावतों, दोहों व प्रसंगों की सादगी, नायक–नायिकाओं की कमनीयता, अलंकरण, विविध पशु–पक्षियों, कमल पुष्पों आदि पर्यावरणीय अंतर्भावों का कुशलता से समावेश कर रूपायित किया है। भूरसिंह शेखावत ने राजस्थान के दृश्य

चित्र, ग्रामीण अंचल एवं मानवीय चित्रण को यथार्थवादी शैली में निरूपित किया। इनके चित्रों में पर्यावरण का प्रभाव साक्षात परिलक्षित होता है। इसी प्रकार मोनी सान्याल के यथार्थवादी दृश्यों में भावुक कलाकार की भाषा का परिष्करण है। इनकी कला सृजना में प्राकृतिक सौन्दर्य व ऐतिहासिक धरोहर से लेकर मानवीय जीवन के क्रियाकलापों को भावानुरूप रूपायित किया है।

कला सृजन की उत्प्रेरणा से ही कलाकार अपने अवचेतन से चेतन मन में मनन व चिन्तन को रचनात्मक रूप देकर कला भाषा में संयोजित करता है। कलाकार ईश्वर द्वारा रचित विभिन्न रूपों को रूपायित कर सौन्दर्यात्मक अनुभूति करता है। सत्य दर्शन का विषय है, शिव धर्म का अनुसंधान है और सुन्दरता कला का मूल श्रोत है। देवकीनन्दन शर्मा ने प्राकृतिक संरचना व जैविक रूपाकारों को अपनी कला का माध्यम बनाया। इन्होंने पशु–पक्षियों मूलतः मयूर की विभिन्न रचनाओं को बदलते मौसम के साथ अपने निजत्व से रचा तथा प्राकृतिक दृश्य को समरसता के साथ संयोजित किया। इनकी चित्रित आकृतियों में पारदर्शिता, सौम्यता, मनमोहक मादकता, संवेदनशीलता तथा शुद्धता परिलक्षित होती है। बी.सी.गुई ने जलरंगों के माध्यम से दैनिक जीवन के दृश्यों, हिमाचल प्रदेश के दृश्यों को तुलिकाबद्ध किया। भीलों के ग्रामीण जीवन को आधार बनाकर गोवर्धन लाल जोशी 'बाबा' ने प्रकृतिजन्य विविध रूपों जैसे खेत–खलिहान, पहाड़ी दृश्य, जंगल और बँधो सुदूर दृश्यावलियाँ तथा भील नर–नारियों को ताजगीपूर्ण रंग, माधुर्य के साथ संयोजित किया है।

प्रकृति की उत्प्रेरणा कलाकारों को नवीनता की ओर अग्रेसित करती है। कलाकार प्रकृति से प्रेरणा लेकर रंग व रेखाओं द्वारा भावों का प्रस्फुटन करता है। सुरेश चन्द्र राजोरिया की कला में प्रकृति चित्रण का वैविध्य व गति निहित दिखाई देती है। इन्होंने मौसम के अनुकूल प्राकृतिक दृश्यों को रूपायित किया। प्रकृति की अनुपम छटा इनके दृश्य चित्रों में वातावरणीय प्रभाव के साथ नियोजित होती देखी जाती है। इनके चित्र गंगावतरण, सन् 1980 में जयपुर की भयंकर बाढ़ तथा 1990 की अयोध्या त्रासदी आदि विषयों के साथ–साथ दृश्य चित्रों में हाट–बाजार, झोपड़ियाँ, नदी–नालों, तालाबों, पेड़–पौधे, पशु–पक्षी और दैनिक क्रियाकलापों में प्राकृतिक चेतना और यथार्थ रूप दिखाई देता है। पल–पल बदलते मौसम की पुरवाइयाँ राम जैसवाल की कला में भी दिखाई देती है। इनके रूपायित आकार–प्रकार असंदिग्ध लगन, चित्र फलक की सुव्यवस्था, जलरंगों व प्राकृतिक वातावरण के बीच तादात्म्य स्थापित कर एक अनूठे आत्म–संयम व मौलिक रूपाकारों तथा कलाकार की संवेदनशील विचारधारा का परिचय दते है। इनके दृश्य चित्रों में गाँव, पहाड़ियाँ, वन–उपवन आदि में धूप–छाव का स्पर्श निहित दिखाई देता है। पी.एन.चोयल की कला में राजस्थान की गौरवमयी धरा व यहाँ के जन–जीवन की आकांक्षा का रचनात्मक रूप रंग व रेखाओं की उर्वरता से उद्भाषित होता देखा जाता है। प्रकृति के इन्हीं बहुरंगीय रूपों को कलाकारों ने अपनी गहन अनुभूति, चेतन शक्ति एवं सशक्त अभिव्यक्ति द्वारा मूत–अमूर्त रूपों में रूपायित किया है।

दृश्य चित्रण के पर्यावरणीय प्रभाव को देखकर दृष्टा उन्मुक्त प्राकृतिक रूपों के विस्तारों में खो जाता है। ठीक वैसे ही, जैसे कभी महत्त्वाकांक्षाओं की स्वप्नाकाश गंगा में उन्हें प्रकृति प्रदत्त मुद्राओं और विभिन्न मनःस्थितियों की पकड़ हो चली है तथा दृष्टा प्रकृति के अनन्य रूपों से साक्षात्कार के साथ मूल सत्य को प्राप्त कर लेता है। अतः कलाकारों ने अपनी कला में रचनात्मक ऊर्जा, सृजनात्मक उत्कृष्टता, रंग निरूपण की सादगी, तकनीकी, रेखाओं की लयबद्धता तथा वातावरणीय प्रभाव के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को निजत्व से रचा है।

निष्कर्ष

आधुनिक संस्कृत पद्य काव्य और चित्रकला में मानव जीवन और प्रकृति के प्रगाढ़ सम्बन्धों का रेखांकन विस्तार से हुआ है। चिंतन"ाील रचनाकारों ने पर्यावरणीय चेतना के विभिन्न रूपों को लिपिबद्ध व आकारिद किया है। जो मानव समाज को सजग व सक्रिय रहने का संदे"ा देती है। रचनाकारों ने जहाँ एक ओर प्रकृति के विभिन्न रसमय वातावरण का चित्रण किया, वहों भूमण्डलीकरण और बढ़ते औद्योगिकरण एवं विकासवाद के नाम पर हाने वाले प्राकृतिक दोहन एवं प्रदूषण पर गहरी चिन्ता व्यक्त की है। सांस्कृति तत्व एवं प्राकृतिक पर्यावरण प्रदूषित होने की वजह से मानवीय मूल्यों का निरन्तर ह्रास हो रहा है। सांस्कृतिक, सामाजिक, भौतिक, जैविक और अजैविक आदि सभी स्तरों पर मानव जीवन के लिए यह समस्या एक विभिषिका बनती जा रही है। ऐसी अनेकानेक विचारधाराऐं भावी शोध संभावना को उजागर करती है। इतना ही नहीं, रचनाकारों के कृतित्व व व्यक्तित्व का विस्तारगत अध्ययन व तुलनात्मक अध्ययन तो सम्भव है ही, वहीं आधुनिक संस्कृत पद्य काव्य व चित्रकला की विषयगत विवेचना भावी शोध की सम्भावना को उजागर करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शेमुषी, द्वितीयों भागः, दशमवर्गाय, संस्कृतपाठ्यपुस्तकम्, राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल, 2–2ए, झालाना डूंगरी, जयपुर, पृष्ठ 03
2. वही, पृष्ठ 04
3. कविवर : हरिरामाचार्यः मधुच्छन्दा, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, झालानियों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर, पृष्ठ 89
4. वही, पृष्ठ 93
5. गुर्जर, डॉ. रामकुमार एवं जाट, डॉ.बी.सी. : पर्यावरण अध्ययन, पंचशील प्रकाशन, फिल्म कॉलोनी, चौड़ा रास्ता, जयपुर, संस्करण– ग्यारहवां, सन् 2015, पृष्ठ 03, 04
6. वही, पृष्ठ 04
7. अशोक : पश्चिम की चित्रकला, ललित कला प्रकाशन, 27–ए, सांकेत कॉलोनी, अलीगढ़ (उ.प्र.), पृष्ठ 225
8. कविवर : हरिरामाचार्यः मधुच्छन्दा, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, झालानियों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर, पृष्ठ 86
9. प्रताप, डॉ. रीता : सुदूरपूर्व की कला (चीन, जापान एवं फारस), राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृष्ठ 152
10. वही, पृष्ठ 248, 249, 250